International Journal of Multidisciplinary Education and Research
ISSN: 2455-4588; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.in
Volume 2; Issue 2; March 2017; Page No. 19-23

जौनपुर जिले के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों का उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर होने वाले प्रभाव का अध्ययन

[1] सुनील मणि त्रिपाठी, [2] डॉ$_0$ जय सिंह

[1] शोध छात्र शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

[2] प्राध्यापक शिक्षा, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश

उपलब्धि की आवश्यकता या जिसे उपलब्धि अभिप्रेरक भी कहा जाता है से तात्पर्य ऐसे अभिप्रेरक से होता है जिससे प्रेरित होकर व्यक्ति अपने कार्य को इस ढंग से करता है कि उसे उसमें अधिक से अधिक सफलता मिल सके। मन फर्नाल्ड व फर्नाल्ड (1972)[1] ने उपलब्धि अभिप्रेरक को परिभाषित करते हुए कहा है "उपलब्धि अभिप्रेरक से तात्पर्य श्रेष्ठता के खास स्तर प्राप्त करने की इच्छा से होता है।" जिन व्यक्तियों में उपलब्धि अभिप्रेरक अधिक होता है, वे अपनी जिन्दगी में अधिक से अधिक उच्च स्तर की सफलता प्राप्त करने की कोशिश करते है। व्यक्ति अपने आने वाली तरूण पीढ़ी के समझ अपने अनुभव एवं मूल्य इस उद्देश्य से रखता है ताकि वे सांस्कृतिक व्यवहार की रक्षा कर सके एवं उनके व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन हो। बालक को विद्यालय में रखकर एक विशेष वर्ष में अध्ययन करने हेतु तैयार किया जाता है। तथा उस वर्ष के अंत में बालकों की परीक्षा लेकर यह ज्ञात किया जाता है कि वह बालक पूरे वर्ष के दौरान पढ़ाये गये पाठ्यक्रम का कितना ज्ञान प्राप्त कर सका। वही उसकी उस वर्ष की शैक्षिक उपलब्धि कहलाती है। अर्थात् एक निश्चित समय सीमा में छात्रों द्वारा विद्यालय में रहकर प्राप्त उपलब्धि शैक्षिक उपलब्धि के नाम से जाना जाता है। माध्यमिक स्तर के छात्रों पर उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर होने वाले प्रभाव की औसत उपलब्धि 29.27 तथा मानक विचलन 7.69 है तथा छात्राओं का औसत उपलब्धि 30.07 तथा मानक विचलन 7.00 है। माध्यमिक स्तर के ग्रामीण विद्यार्थियों पर उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव की औसत उपलब्धि 28.70 तथा मानक विचलन 7.39 है तथा शहरी विद्यार्थियों का औसत उपलब्धि 30.67 तथा मानक विचलन 6.92 है।

मूल शब्दः जौनपुर जिला, माध्यमिक स्तर, छात्र, उपलब्धि अभिप्रेरक, शैक्षणिक उपलब्धि

1. प्रस्तावना

शिक्षा अनुसंधान के क्षेत्र में अधिकांश अनुसंधान इसी क्षेत्र में हुये हैं। अधिकांश षोध, कार्यों में मनोवैज्ञानिक तथा शैक्षिक चरों में सह–सम्बन्ध का अध्ययन किया गया है, परन्तु शोध के द्वारा अधिगम प्रक्रिया के समझने का प्रयास किसी ने नहीं किया। अतः इस क्षेत्र में आज भी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को समझने की आवष्कता है। कक्षा–अधिगम सम्बन्धी समस्याओं के अध्ययन के लिए शोध कार्यों का नियोजन किया जाना चाहिये। इसके अतिरिक्त अभिप्रेरणा पुनर्बलन, तथा व्यक्तिगत विभिन्नता के अनुसार शिक्षण–अधिगम परिस्थितियों का अध्ययन करना आवश्यक है।

प्राचीन ऋषि परम्परा से सम्बन्धित होते हुए भी मानवतावाद में विनोबा ने केवल आध्यात्म पर बल नहीं दिया। वे विज्ञान की सेवाओं को नकारते नहीं बल्कि विज्ञान की उपलब्धियों का मानव–कल्याण के लिए प्रयोग करने पर बल देते हैं। उनका कहना यह अवश्य है कि केवल विज्ञान के द्वारा मानव का कल्याण सम्भव नहीं है। इसलिए वे इस बात पर बल देते हैं कि आध्यात्म और विज्ञान के बीच समन्वय स्थापित किया जाना चाहिए। विनोबा ने स्पश्ट कहा है ''मैं साइंस का बहुत भक्त हूँ और चाहता हूँ कि साइंस बढ़ती जाए। एक तो मेरी भक्ति है आध्यात्म पर और दूसरी है विज्ञान पर। विज्ञान बाहर की सृष्टि का ज्ञान देता है और आध्यात्म अन्दर की सृष्टि का। इस प्रकार दोनों एक दूसरे के पूरक हैं।'' विनोबा का विष्वास है कि इन दोनों में से अलग–अलग से प्रत्येक अपूर्ण है। मानव के वास्तविक कल्याण के लिए दोनों में समन्वय और सहयोग आवश्यक है।

शिक्षा व्यक्ति के विचारों को जो कि सांवेगिक एवं बौद्धिक होते है कि पूर्ण अभिव्यक्ति में सहायक होता है, इसके द्वारा बालक अपने संवेगों पर नियंत्रण, सहानुभूति, स्वआत्मन, स्वप्रबंधन, सामाजिक जागरूकता, तनाव नियंत्रण, आदि करना सीखता है एवं इसके द्वारा उपयुक्त निर्णय लेकर प्रत्येक क्षेत्र में समायोजित होकर अच्छा प्रदर्शन करता है। जिन बालकों अथवा छात्रों में संवेगात्मक स्थिरता का अभाव होता है तथा वातावरण के साथ समायोजन करने में वे कठिनाई का अनुभव करते है। अतः शिक्षा द्वारा छात्रों को सांवेगिक रूप से परिपक्व बनाकर उन्हें वातावरण में उचित समायेजित किया जा सकता है।

जो शक्ति तत्त्व तथा मूलभूत आधार उनके इस प्रकार के व्यवहार का संचालन करते हैं, उन्हें मनोवैज्ञानिक भाषा में अभिप्रेरक संज्ञा दी जाती है अभिप्रेरक को सामान्य रूप से दोव्यापक वर्गों में बांटा जा सकता है – (1) प्राथमिक एवं (2) द्वितीयक अभिप्रेरक।

प्राथमिक अभिप्रेरक वे होते है जिनका सीधा संबंध व्यक्ति की ऐसी प्राथमिक मूलभूत आवश्यकताओं से होता है जिनकी संतुष्टि में उसके अपने जीवन की बागडोर, सृष्टि की संरचना या प्रजाति का संरक्षण छुपा रहता है। द्वितीयक अभिप्रेरक – इन अभिप्रेरकों का अस्तित्व जन्म से नहीं होता, बल्कि इन्हें सीखा या उपार्जित किया जाता है। व्यक्ति के व्यवहार से जब इनमें से किसी भी प्रकार का प्राथमिक या सैकण्डरी अभिप्रेरक जुड़ जाता है तो उसका व्यवहार अभिप्रेरित या अभिप्रेरणात्मक व्यवहार बन जाता है।

अभिप्रेरणात्मक व्यवहार के जो विराम, लक्ष्य प्राप्ति के साथ मिलता है, वह किसी तरह से पूर्ण विराम नहीं होता। अभिप्रेरणात्मक चक्र रूपी यात्रा अपनी आगे की मंजिलों पर फिल चलना प्रारंभ कर देती है, क्योंकि जैसे ही व्यक्ति को लक्ष्य की प्राप्ति होती है तथा इसकी प्राप्ति से जो संतुष्टि तथा सुख मिलता है, वह उसके व्यवहार को उसी दिशा में आगे पुनर्बलित करने का साधन बन जाती है। दूसरे शब्दों में उसे अपने व्यवहार को आगे उसी दिशा में बढ़ाते रहने के लिए प्रलोभन तथा प्रोत्साहन की प्राप्ति होती है। इसी प्रोत्साहन के

फलस्वरूप उसे फिर एक नई अभिप्रेरणा प्राप्त होती है तथा फिर एक दुगुने जोश और उमंग से भरे हुये अभिप्रेरक का प्रादुर्भाव होता है तथा उसके व्यवहार को अभिप्रेरित कर नये लक्ष्य की प्राप्ति में फिर जुट जाता है।

शोधार्थी शिक्षा के कार्य में विगत कई वर्षो से संलग्न है। शैक्षिक गतिविधियों के प्रति शोधार्थी की रुचि शिक्षा के क्षेत्र में कुछ नवाचारी कार्य करने की भावना से इस बात की प्रेरणा है कि वह जौनपुर जिले के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों का उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर होने वाले प्रभाव का अध्ययन हेतु शोध इस क्षेत्र के साथ ही साथ देश के अन्य क्षेत्रों में भी शैक्षिक स्थिति को अधिक सशक्त व प्रभावी बनाने की दिशा में सार्थक सिद्ध हो सके।

2. अध्ययन की आवश्यकता

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल जौनपुर जिले वरन् सम्पूर्ण उत्तरप्रदेश के उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर होने वाले प्रभाव की वर्तमान स्थिति तथा उसमें आने वाली कठिनाइयों का आंकलन किया जा सकेगा।

3. शोध की परिकल्पनायें

1. माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं पर उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर होने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों पर उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

4. उद्देश्य

- माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं पर उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर होने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
- माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों पर उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

5. शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र जिला जौनपुर जिला है। इसके अन्तर्गत 6 तहसील – शाहगंज, जौनपुर, बदलापुर, मेरिअहु, मछलीशहर एवं केरकट हैं। अतः जिला अन्तर्गत स्थित माध्यमिक स्तर, ब्लाक शिक्षा केन्द्र, जिला शिक्षा केन्द्र द्वारा किये जाने वाले शैक्षणिक उपलब्धि सम्बन्धी कार्यक्रम इस अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित है।

6. शोध विधियाँ

शोध कार्य को संपूर्णता प्रदान करने हेतु सांख्यिकी विधि का उपयोग किया गया है।

सांख्यिकी विधि

प्रयुक्त शोध उपकरणों से प्राप्त प्रदत्तों के सारणीयन के उपरान्त आवश्यकतानुसार माध्य, माध्यिका एवं बहुलक, दो चरों में सार्थक अन्तर के आंकलन हेतु मध्यमान विचलन, सह–सम्बन्ध, काई परीक्षण, टी–परीक्षण जैसी सांख्यिकी विधियों का आवश्यकतानुसार प्रयोग किया गया है।

7. न्यादर्श चयन

जौनपुर जिला का क्षेत्र व्यापक है, जिस कारण सभी माध्यमिक स्तर के विद्यालयों का अध्ययन करना संभव नहीं है, इसलिए जिले के सभी तहसीलो से 5–5 विद्यालय कुल 30 विद्यालयों का चयन दैव निदर्शन द्वारा अध्ययन हेतु किया गया। विद्यालयों का चयन करते समय यह विशेष रूप से ध्यान रखा गया कि सभी तहसीलों के विद्यालय ऐसे हो जो अपने–अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर सके तथा ये सभी विद्यालय षहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों से संवंधित हो। षोध कार्य के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु गहन अध्ययन करने के लिए न्यादर्ष के रूप में चयनित विद्यालयों से 10 छात्र और 10 छात्राएं कुल 600 का चयन दैव निदर्षन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया गया है।

8. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर होने वाले प्रभाव पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – राय एम.एम. (1976)[2], कौल, लोकेश (1998)[3], कपिल, एच.के. (1996)[4], त्रिपाठी, मनीष व डॉ. जय सिंह (2016)[5, 6] एवं श्रीवास्तव, डॉ. छाया एवं डॉ. जय सिंह (2016)[7].

9. शोध क्षेत्र का परिचय

जौनपुर जिला वाराणसी प्रभाग के उत्तर–पश्चिम भाग में स्थित है। इसकी भूमि क्षेत्र 24.24°N से 26.12°N अक्षांश और 82.70°E और 83.50°E देशांतर के बीच फैली हुई है। जिले का भौगोलिक क्षेत्रफल 4038 कि.मी.^{2} है। इसके अन्तर्गत 6 तहसील – शाहगंज, जौनपुर, बदलापुर, मेरिअहु, मछलीशहर एवं केरकट हैं।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना कमांक –01

"माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं पर उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर होने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"

तालिका 1: माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं पर उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर होने वाले प्रभाव का अध्ययन

क्र.	प्राप्तांक की स्थिति	माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं पर उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर होने वाले प्रभाव का अध्ययन			
		छात्र		छात्राएँ	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	0 से ऊपर किन्तु 20 अंक से कम (उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव की प्राप्ति नहीं)	24	8.00	12	4.00
2.	20 अंक से अधिक किन्तु 30 अंक से कम (उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव की प्राप्ति)	134	44.67	139	46.33
3.	30 अंक से अधिक किन्तु 40 अंक से कम (उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव की ओर अग्रसर)	126	42.00	131	43.67
4.	40 अंक से अधिक किन्तु 50 अंक से कम (उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव की ओर पूर्णरूप से अग्रसर)	16	5.33	18	6.00

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त तालिका क्रमांक – 1 से न्यादर्श हेतु चयनित माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत 300 छात्र एवं 300 छात्राओं का उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव सम्बंधी जानकारी का संकलन किया गया है। उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है, कि शोध क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर न्यादर्श हेतु चयनित कुल 300 छात्रों में से 8.00 प्रतिशत छात्रों ने उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव की प्राप्ति नही की, जबकि 44.67 प्रतिशत छात्रों ने उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव की प्राप्ति कर ली है तथा 42.00 प्रतिशत छात्र उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव की ओर अग्रसर है एवं 5.33 प्रतिशत छात्रों ने उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव की ओर पूर्णरूप से अग्रसर है।

शोध क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर न्यादर्श हेतु चयनित कुल 300 छात्राओं में से 4.00 प्रतिशत छात्राओं ने उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव की प्राप्ति नही की, जबकि 46.33 प्रतिशत छात्राओं ने उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव की प्राप्ति कर ली है तथा 43.67 प्रतिशत छात्राओं ने उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव की ओर अग्रसर है एवं 6.00 प्रतिशत छात्राओं ने उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव की ओर पूर्णरूप से अग्रसर है।

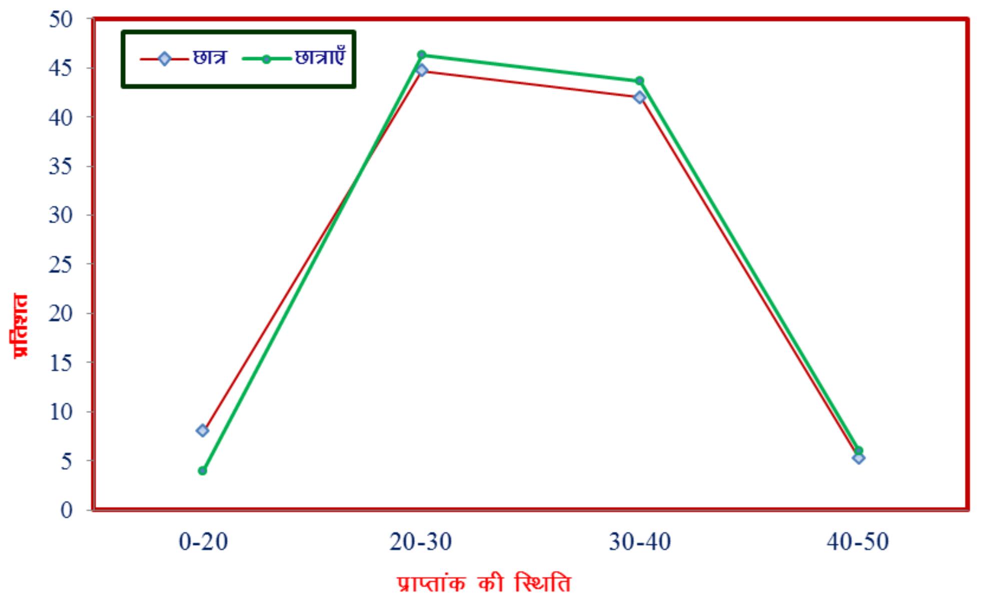

आरेख क्र. 1 : माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं पर उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर होने वाले प्रभाव का अध्ययन

तालिका 2: सार्थकता हेतु सारणी

समूह	संख्या	सामान्तर माध्य	मानक विचलन	अनुपात
छात्र	300	29.27	7.69	–1.33
छात्राएँ	300	30.07	7.00	

$d.f = (N_1\text{-}1) + (N_2\text{-}1)$
$= (300\text{-}1) + (300\text{-}1)$
$= 299 + 299$
$= 598$

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त सारणी में न्यादर्श में चयनित माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं पर उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर होने वाले प्रभाव का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है। सांख्यिकी विश्लेषण से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के छात्रों पर उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर होने वाले प्रभाव की औसत उपलब्धि 29.27 तथा मानक विचलन 7.69 है तथा छात्राओं का औसत उपलब्धि 30.07 तथा मानक विचलन 7.00 है।

माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं पर उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का सार्थकता सारणी में किया गया है। दोनों समूहों की औसत उपलब्धियों में अंतर की गणना 't' परीक्षण के द्वारा की गई है। गणना से प्राप्त 't' का मान –1.33 है।

5.98 d.f. पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.60 एवं 0.05 विश्वास स्तर पर 1.65 है, जबकि गणना से प्राप्त 't' का मान –1.33 है जो कि दोनों विश्वास स्तरों पर मानक मानों से कम है। अतः माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं पर उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर होने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अतः परिकल्पना सत्यापित

परिकल्पना क्रमांक –02

"माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों पर उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"

तालिका 3: माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों पर उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

क्र.	प्राप्तांक की स्थिति	माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों पर उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन			
		ग्रामीण		शहरी	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	0 से ऊपर किन्तु 20 अंक से कम (उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव की प्राप्ति नहीं)	26	8.67	13	4.33
2.	20 अंक से अधिक किन्तु 30 अंक से कम (उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव की प्राप्ति)	143	47.67	126	42.00
3.	30 अंक से अधिक किन्तु 40 अंक से कम (उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव की ओर अग्रसर)	120	40.00	139	46.33
4.	40 अंक से अधिक किन्तु 50 अंक से कम (उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव की ओर पूर्णरूप से अग्रसर)	11	3.67	22	7.33

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त तालिका क्रमांक – 2 से न्यादर्श हेतु चयनित माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत 300 ग्रामीण एवं 300 शहरी विद्यार्थियों का उपलब्धि परीक्षण पर शालेय संवेगात्मक वातावरण के प्रभाव सम्बंधी जानकारी का संकलन किया गया है। शोध क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर न्यादर्श हेतु चयनित कुल 300 ग्रामीण विद्यार्थियों में से 8.67 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों ने उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव की प्राप्ति नही की, जबकि 47.67 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों ने उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव की प्राप्ति कर ली है तथा 40.00 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव की ओर अग्रसर है एवं 3.67 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों ने उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव की ओर पूर्णरूप से अग्रसर है।

शोध क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर न्यादर्श हेतु चयनित कुल 300 शहरी विद्यार्थियों में से 4.33 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों ने उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव की प्राप्ति नही की, जबकि 42.00 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों ने उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव की प्राप्ति कर ली है तथा 46.33 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों ने उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव की ओर अग्रसर है एवं 7.33 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों ने उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव की ओर पूर्णरूप से अग्रसर है।

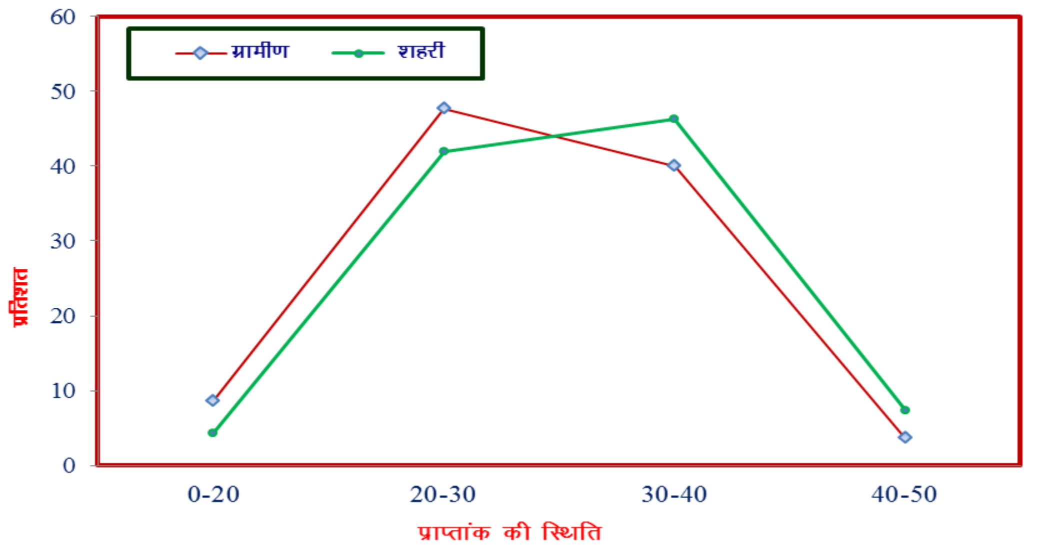

आरेख क्र. 2 : माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों पर उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

तालिका 4: सार्थकता हेतु सारणी

समूह	संख्या	सामान्तर माध्य	मानक विचलन	अनुपात
ग्रामीण	300	28.70	7.39	–3.36
शहरी	300	30.67	6.92	

$d.f = (N_1-1) + (N_2-1)$
$= (300-1) + (300-1)$
$= 299+ 299$
$= 598$

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त सारणी क्र. 2 में न्यादर्श में चयनित माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों पर उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का सांख्यिकीय विष्लेशण किया गया है। सांख्यिकी विश्लेषण से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के ग्रामीण विद्यार्थियों पर उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव की औसत उपलब्धि 28.70 तथा मानक विचलन 7.39 है तथा शहरी विद्यार्थियों का औसत उपलब्धि 30.67 तथा मानक विचलन 6.92 है।

शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों पर उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का सार्थकता सारणी में किया गया है। गणना से प्राप्त श्ज श का मान –3.36 है।

5.98 d.f. पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.60 एवं 0.05 विश्वास स्तर पर 1.65 है, जबकि गणना से प्राप्त 't' का मान –3.36 है जो कि दोनों विश्वास स्तरों पर मानक मानों से कम है। अतः माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों पर उपलब्धि अभिप्रेरक का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अतः परिकल्पना सत्यापित

11. संदर्भ

1. Munn, Fernald & Fernald 1972. Generally this motive (achievement motivation) is defined as a desire for attaining some specific standard of excellence, Introduction to Psychology. 369.
2. राय, डॉ. एम.एम. मृदा विज्ञान, भोपाल (भारत): मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1976. पृष्ठ. 202.
3. कौल लोकेश – शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, विकास पब्लिसिंग हाउस प्रा.लि., नई दिल्ली, 1998.
4. कपिल, एच.के. – सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1996.
5. त्रिपाठी, मनीष एवं डॉ. जय सिंह – रीवा संभाग में हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, International Journal of Advanced Educational Research. 2016; 1(5):48-50.
6. त्रिपाठी, मनीष एवं डॉ. जय सिंह – रीवा संभाग में हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, International Journal of Multidisciplinary Education and Research. 2016; 1(9):05-07.
7. श्रीवास्तव, डॉ. छाया एवं डॉ. जय सिंह – माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण अधिगम क्षमता का अध्ययन (सतना जिले के संन्दर्भ में), International Journal of Multidisciplinary Education and Research. 2016; 1(3):63-65.